2. विवेच्य उपन्यास का केंद्रीय विषय कौन-सा है ?
3. दलित लोगों का भारतीय समाज जीवन में क्या स्थान है ?
4. उच्चवर्गीय समाज की मानसिकता किस प्रकार रही होगी ?
5. विवेच्य उपन्यास में कौन-कौन-सी समस्याओं का चित्रण हुआ है ?
6. विवेच्य उपन्यास की भाषा-शैली किस प्रकार की है ?

प्रस्तुत उपन्यास के अध्ययन के उपरांत उक्त प्रश्नों के जो उत्तर प्राप्त हुए हैं उन्हें उपसंहार में दर्ज किया है। अध्ययन की सुविधा हेतु मैंने लघु शोध-प्रबंध को निम्नांकित पाँच अध्यायों में विभाजित करके प्रस्तुत शोध-विषय का विवेचन-विश्लेषण किया है-

प्रथम अध्याय : ''जगदीशचंद्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' -

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत जगदीशचंद्र का जीवन तथा साहित्य का परिचय दिया है। व्यक्तित्व के अंतर्गत जन्म एवं जन्मस्थान, माता-पिता, बचपन, पारिवारिक स्थिति, शिक्षा, नौकरी तथा व्यवसास, वैवाहिक जीवन तथा व्यक्तित्व की विशेषताएँ आदि पर प्रकाश डाला है। कृतित्व के अंतर्गत उनके साहित्य का परिचय तथा उनके साहित्य की विशेषताओं पर प्रकाश डाला है। साथ ही सम्मान एवं विभिन्न पुरस्कारों का परिचय प्रस्तुत किया है। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

द्वितीय अध्याय : '' 'धरती धन न अपना' उपन्यास का वस्तुपरक विवेचन'' -

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत मैंने वस्तुपकर विवेचन से तात्पर्य एवं स्वरूप, कथावस्तु का अर्थ, विवेच्य उपन्यास सदियों से पद्दलित समाज का खुला दस्तावेज है आदि बातों का वस्तुपरक विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत किया है। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

तृतीय अध्याय : '' 'धरती धन न अपना' उपन्यास में चित्रित दलित समाज का यथार्थ''

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत मैंने विवेच्य उपन्यास में चित्रित दलित समाज के यथार्थ को स्पष्ट किया है। इस अध्याय में साहित्य में यथार्थ का स्वरूप तथा 'दलित' शब्द के अर्थ एवं परिभाषा के संदर्भ में विवेचन-विश्लेषण किया है। विवेच्य उपन्यास में चित्रित

दलितों की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति के यथार्थ का विवेचन-विश्लेषण किया है। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

चतुर्थ अध्याय : '' 'धरती धन न अपना' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ''

प्रस्तुत अध्याय में विवेच्य उपन्यास को आधार बनाकर दलित समाज की विभिन्न समस्याओं का विवेचन-विश्लेषण किया है। इस समस्याओं के अंतर्गत सामाजिक समस्या, धार्मिक समस्या, आर्थिक समस्या तथा राजनीतिक समस्याओं का विवेचन-विश्लेषण उद्धहरणों को आधार बनाकर किया है। अंत में प्राप्त यथातथ्य निष्कर्ष दिए गए हैं।

पंचम अध्याय : '' 'धरती धन न अपना' उपन्यास का भाषा-शिल्प'' -

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत मैंने विवेच्य उपन्यास में प्रयुक्त भाषा-शिल्प का विवेचन-विश्लेषण किया है। उपन्यास में भाषा-शैली का अहम् महत्त्व होता है। इसी के अनुसार लोकभाषा के शब्द, संस्कृत के तत्सम, तद्भव शब्द, अरबी, फारसी, अंग्रेजी, उर्दू शब्दों का तथा मुहावरें, कहावतें, सूक्तियाँ, अपशब्दों आदि भाषा प्रयोगों का और प्रतीकात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली, प्रश्नोत्तर शैली, गीतात्मक शैली, सांकेतिक शैली, मनोवैज्ञानिक शैली, संवाद शैली आदि विभिन्न शैलियों का विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत किया है। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

अंत में 'उपसंहार' के रूप में इस लघु शोध-प्रबंध का सार रूप दिया है। इसमें पूर्ण विवेचित अध्यायों के प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष को दिया गया है। इसके उपरांत संदर्भ ग्रंथ-सूची दी गई है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता -

1. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध 'धरती धन न अपना' उपन्यास में चित्रित दलित समाज के यथार्थ पर केंद्रित है, जो पहली बार अलग रूप से संपन्न हुआ है।
2. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में लेखक जगदीशचंद्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का समग्र लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है।

3. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में स्वातंत्र्योत्तर दलित समाज का यथार्थता से अंकन हुआ है।
4. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में उच्चवर्गीय समाज तथा दलित समाज के आपसी संबंध तथा उससे व्युत्पन्न समस्याओं का कटु सत्य विशेष रूप से उजागर किया है।
5. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में विवेच्य उपन्यास की भाषा-शैली का अध्ययन किया है।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करनेवाले हितैषियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना आद्य कर्तव्य समझता हूँ।

श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. प्रकाश भाऊसो मोकाशी, अध्यक्ष, हिंदी अध्ययन मंडल, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर एवं हिंदी विभागाध्यक्ष, यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, इस्लामपुर के चिंतनशील, शोधपरक एवं पांडित्यपूर्ण निर्देशन में मुझे शोध-कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। निरंतर अध्ययन-अनुसंधान, अध्यापन एवं चिंतन में व्यस्त रहने के बावजूद भी आपने अपना बहुमूल्य समय देकर मेरे शोध-कार्य को संपन्न बनाने में सहर्ष एवं सक्रिय सहयोग दिया है। आपने मुझे शोध-कार्य, शोध-विषय एवं शोध की भाषा को लेकर कई बातों का ज्ञान दिया है। अतः आपके इस कर्तव्य के प्रति मैं धन्यवाद देता हूँ। आपके प्रति शब्दों में कृतज्ञता ज्ञापित करना असंभव है, मैं आपके ऋण में रहना ही पसंद करूँगा।

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, हिंदी विभाग की विभागाध्यक्ष आदरणीय डॉ. पद्मा पाटील जी का मैं आभारी हूँ। उन्होंने मुझे अपने व्यक्तिगत व्यस्तता से समय देकर मार्गदर्शन एवं सहयोग दिया। साथ-साथ हिंदी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. अर्जुन चव्हाण सर, डॉ. शोभा निंबालकर जी ने भी मुझे मार्गदर्शन एवं सहयोग दिया उनके प्रति भी मैं आभारी हूँ।

शुरू से ही जिन्होंने मुझे प्रेरणा दी और मार्गदर्शन किया वे राधानगरी महाविद्यालय के अधिव्याख्याता वसंत ढेरे सर तथा हुपरी महाविद्यालय, कोल्हापुर के प्रधानाचार्य डॉ. टी. एस्. पाटील सर आपके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

शरदचंद्र पवार महाविद्यालय, लोणंद के प्रधानाचार्य डॉ. व्ही. एन्. नलवडे सर तथा हिंदी विभाग प्रमुख प्रा. डी. आर. भोसले ने मुझे समय-समय पर मार्गदर्शन एवं सहयोग दिया। अतः मैं उनका आभारी हूँ।

आदरणीय एवं श्रद्धेय, परमात्मा स्वरूप मेरे पिता सदू और माता तानुबाई, बड़े भाई मारुती एवं भाभी चांगुबाई इन सभी के अनवरत परिश्रम, स्नेह और आशिर्वाद से मैं आज तक की शिक्षा एवं अनुसंधान कार्य पूरा कर सका हूँ। मैं सदैव उनके ऋणों में रहना पसंद करूँगा।

मेरे शुभकांक्षी और मेरे मित्र मालोजी जगताप, राजू लोखंडे, रमेश पाटील, वालचंद नागरगोजे, झाकीर काझी, शंकर पाटील, अरिफ महात तथा एम्. फिल. की सहेलियाँ सीमा पाटील, सारीका कांबले, सुनिता कदम का भी इस लघु शोध-प्रबंध कार्य की पूर्ति के लिए महत्त्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। अतः इन सभी के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रंथों की प्राप्ति मुझे बॅरिस्टर बालासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, कोल्हापुर तथा कला व वाणिज्य महाविद्यालय, माढा के ग्रंथालय से हुई। इस ग्रंथालय के कर्मचारियों का महत्त्वपूर्ण सहयोग मिला। अतः मैं इन सब का ऋणी हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध के संगणक-टंकण का अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य अल्ताफ मोमीन, कोल्हापुर ने सुचारू रूप से तथा तत्परता से करके शोध-प्रबंध प्रस्तुति के लिए उचित योगदान दिया है। अतः मैं उनके प्रति विशेष आभारी हूँ।

अंत में जिन्होने इस शोध-कार्य को संपन्न बनाने के लिए प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहयोग दिया है, मैं उन सबके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ और इस लघु शोध-प्रबंध को विद्वतजनों के सम्मुख विनम्रतापूर्वक परीक्षण हेतु प्रस्तुत करता हूँ।

शोध-छात्र

(श्री. नवनाथ सदू पाटील)

स्थल : कोल्हापुर।

तिथि : 16-03-09

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय - ''जगदीशचंद्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' **पृ. 1 - 17**

विषय-प्रवेश

1.1 व्यक्तित्व

1.1.1 जन्म

1.1.2 बचपन

1.1.3 परिवार

1.1.4 विवाह

1.1.5 संतान

1.1.6 शिक्षा

1.1.7 नौकरी

1.1.8 मित्र-परिवार

1.1.9 लेखन की प्रेरणा

1.1.10 मृत्यु

1.1.11 व्यक्तित्व की विशेषताएँ

1.1.11.1 संवेदनशील

1.1.11.2 लेखन के प्रति निष्ठा

1.1.11.3 मिलनसार व्यक्तित्व

1.1.11.4 साहसी

1.1.11.5 जाति-भेद विरोधी

1.1.11.6 लेखकीय व्यक्तित्व

1.1.11.7 फर्निचर बनाने में माहिर

1.1.11.8 प्रभाव

1.1.11.9 समाजवादी यथार्थ के पक्षधर

1.2 कृतित्व

1.2.1 कहानी साहित्य

1.2.2 नाटक साहित्य

1.2.3 उपन्यास साहित्य

1.2.3.1 यादों के पहाड़

1.2.3.2 धरती धन न अपना

1.2.3.3 आधा पुल

1.2.3.4 कभी न छोड़े खेत

1.2.3.5 मुट्ठी भर काँकर

1.2.3.6 टुग्डा लाट

1.2.3.7 घास गोदाम

1.2.3.8 नरककुंड में बास

1.2.3.9 लाट की वापसी

1.2.3.10 जमीन अपनी तो थी

1.3 प्राप्त सम्मान

1.4 अन्य

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय - '' 'धरती धन न अपना' उपन्यास का वस्तुपरक विवेचन'' पृ. 18 - 43

विषय-प्रवेश

2.1 वस्तुपरक विवेचन से तात्पर्य

2.1.1 वस्तुपरक विवेचन का स्वरूप

2.1.2 कथावस्तु का अर्थ

2.1.3 उपन्यास में कथावस्तु का महत्त्व

2.2 'धरती धन न अपना' उपन्यास का वस्तुपरक विवेचन

2.2.1 काली का गाँव पुनरागमन

2.2.2 चौधरी हरनामसिंह की दहशत

2.2.3 पिता की इच्छापूर्ति में व्यस्त काली

2.2.4 मुंशी छज्जूशाह की साहूकारी

2.2.5 काली का जख्मी होना

2.2.6 लालू पहलवान का व्यक्तित्व

2.2.7 बलात्कारित युवती लक्षो

2.2.8 दलित युवक मंगू की चापलूसी

2.2.9 पटवारी तथा मुंशी चौधरी का भ्रष्टाचार

2.2.10 नन्दसिंह चमार का धर्म-परिवर्तन

2.2.11 प्रतापी चाची की मृत्यु

2.2.12 काली के घर चोरी होना

2.2.13 बाढ़ से पीड़ित दलित

2.2.14 चमारों द्वारा बायकाट करना

2.2.15 डॉ. बिशनदास की संकुचित दृष्टि

2.2.16 काली-ज्ञानों की प्रेम-कहानी

2.2.17 पुनः काली का गाँव छोड़ना

2.3 'धरती धन न अपना' उपन्यास का मूल्यांकन

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय - '' 'धरती धन न अपना' उपन्यास में चित्रित दलित समाज का यथार्थ'' पृ. 44 - 90

विषय-प्रवेश

3.1 यथार्थ : अर्थ एवं स्वरूप

3.1.1 यथार्थ : व्युत्पत्तिगत अर्थ

3.1.2 यथार्थ का स्वरूप

3.1.3 यधार्थ : परिभाषा

3.1.4 यथार्थवाद के भेद

3.2 दलित : अर्थ एवं परिभाषा

3.2.1 'दलित' शब्द का कोशगत अर्थ

3.2.2 'दलित' शब्द की परिभाषा

3.3 'धरती धन न अपना' उपन्यास में चित्रित दलित समाज का यथार्थ

3.3.1 सामाजिक स्थिति का यथार्थ

3.3.1.1 दलित समाज का जीवन

3.3.1.2 उच्चवर्गीयों द्वारा शोषित दलित समाज

3.3.1.3 अस्पृश्य मानकर सवर्णों द्वारा शोषित दलित

3.3.1.4 सरकारी अधिकारी द्वारा शोषित दलित

3.3.1.5 शोषित दलित नारी

3.3.1.6 अंधविश्वासी दलित समाज

3.3.1.7 दलितों द्वारा प्रतिरोध

3.3.1.8 दलित नारी का प्रतिरोध

3.3.2 आर्थिक स्थिति का यथार्थ

3.3.2.1 उच्चवर्गीयों द्वारा दलितों का आर्थिक शोषण

3.3.2.2 सरकारी अधिकारियों द्वारा आर्थिक शोषण

3.3.3 धार्मिक स्थिति का यथार्थ

3.3.3.1 धार्मिक भेदाभेद

3.3.3.2 धर्म के ठेकेदारों द्वारा शोषित दलित

3.3.3.3 धर्मांतरित दलित समाज

3.3.4 राजनीतिक स्थिति का यथार्थ

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय - '' 'धरती धन न अपना' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ'' **पृ. 91 - 129**

विषय-प्रवेश

4.1 'समस्या' शब्द का अर्थ

4.2 'धरती धन न अपना' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ

4.2.1 सामाजिक समस्याएँ

4.2.1.1 प्रेम समस्या

4.2.1.2 विवाह समस्या

4.2.1.3 स्त्री-भ्रूण हत्या

4.2.1.4 अवैध यौन-संबंध

4.2.1.5 नारी शोषण

4.2.1.6 अंधविश्वास

4.2.1.7 दलित शोषण

4.2.2 आर्थिक समस्याएँ

4.2.2.1 रोजगार की समस्या

4.2.2.2 भूमिहीन मजदूरों की समस्या

4.2.2.3 आर्थिक विपन्नता की समस्या

4.2.3 धार्मिक समस्याएँ

4.2.3.1 जातिभेद

4.2.3.2 धर्म-परिवर्तन

4.2.3.3 ऊँच-नीच की समस्या

4.2.4 राजनीतिक समस्याएँ

4.2.4.1 भ्रष्टाचार

4.2.4.2 अवसरवादिता

निष्कर्ष

पंचम अध्याय - '' 'धरती धन न अपना' उपन्यास का भाषा-शिल्प'' **पृ. 130 - 159**

विषय-प्रवेश

5.1 भाषा-शिल्प

5.2 साहित्य में भाषा-शिल्प का महत्त्व

5.3 'धरती धन न अपना' उपन्यास का भाषा-शिल्प

5.4 शब्द-प्रयोग

5.4.1 लोकभाषा के शब्द

5.4.2 तत्सम शब्द

5.4.3 तद्भव शब्द

5.4.4 देशज शब्द

5.4.5 विदेशी शब्द

5.4.6 अन्य शब्द

5.4.6.1 ध्वन्यार्थक शब्द

5.4.6.2 निरर्थक शब्द

5.4.6.3 पुनरूक्ति शब्द

5.4.6.4 संयुक्त शब्द

5.5 मुहावरें

5.6 कहावतें

5.7 भाषा-शैली

5.7.1 शैली का अर्थ

5.7.2 शैली की परिभाषा

5.7.3 'धरती धन न अपना' उपन्यास में चित्रित भाषा-शैली

5.7.3.1 प्रतीकात्मक शैली

5.7.3.2 वर्णनात्मक शैली

5.7.3.3 प्रश्नोत्तर शैली

5.7.3.4 गीतात्मक शैली

5.7.3.5 सांकेतिक शैली

5.7.3.6 मनोवैज्ञानिक शैली

5.7.3.7 संवाद शैली

5.7.3.8 पूर्वदीप्ति शैली

5.8 सूक्तियाँ

5.9 अलंकार योजना

5.10 दलित समाज में दी जानेवाली गालियों का प्रयोग

निष्कर्ष

उपसंहार **पृ. 160 -167**

संदर्भ ग्रंथ सूची **पृ. 168 - 175**